साहित्य अकादमी में 3 दिवसीय साहित्योत्सव शुरू, लगी प्रदर्शनी

वाचिक साहित्य को पाठ्यक्रम में शामिल करना जरूरी : अब्बी

नई दिल्ली, 24 फरवरी(नवोदय टाइम्स): साहित्य अकादमी के वार्षिक कार्यक्रम साहित्योत्सव-2020 का शुभारंभ सोमवार को अकादमी की वर्ष 2019 की गतिविधियों को बयां करती प्रदर्शनी के उद्घाटन से हुआ। प्रदर्शनी का उद्घाटन आपका बंटी और महाभोज जैसे उपन्यास लिखने वाले लेखिका मन्नू भंडारी ने किया। उद्घाटन सत्र में पारंपरिक दक्षिण भारतीय वाद्य यंत्रों के स्वरों के बीच दीप प्रज्ज्वलन भी किया गया। उद्घाटन सत्र में अकादमी अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार, उपाध्यक्ष माधव कौशिक व अकादमी सचिव के. श्रीनिवासराव एवं विभिन्न भारतीय भाषाओं के संयोजक भी उपस्थित थे। उद्घाटन सत्र के स्वागत भाषण में के. श्रीनिवासराव ने कहा कि अकादमी ने पिछले वर्ष 715 कार्यक्रम आयोजित किए, 484 किताबें प्रकाशित की, जिनमें 239 नए प्रकाशन और 245 पुन: मुद्रित पुस्तकें थीं। इसके अलावा उन्होंने विभिन्न देशों के बीच सांस्कृतिक विनिमय की भी जानकारी दी।

3 दिवसीय अखिल भारतीय आदिवासी सम्मेलन भी हुआ शुरू

साहित्योत्सव में सोमवार दोपहर 3 दिवसीय अखिल भारतीय आदिवासी सम्मेलन की शुरुआत की गई, जिसके उद्घाटन वक्तव्य में भाषाविज्ञानी एवं विदुषी अन्विता अब्बी ने कहा कि आदिवासी वाचिक साहित्य, लोक साहित्य की परंपरा की ही कड़ी है, जिसमें हमारा दैनिक जनजीवन नदी की धारा की भांति प्रवाहित होता है। हमें सामाजिकता एवं समावेशिता को साथ-साथ लेकर चलना चाहिए।

चौबीस भाषाओं के लेखकों का सम्मान

नई दिल्ली | प्रमुख संवाददाता

साहित्य में अपने समय का सच दर्ज होता है। लेखक अपने समाज की सच्चाइयों और चिंताओं को अगली पीढ़ी के लिए दर्ज करता है। साहित्य अकादमी द्वारा आयोजित साहित्योत्सव समारोह के दूसरे दिन मंगलवार को आयोजित पुरस्कार अर्पण कार्यक्रम में कुछ इसी प्रकार के विचार व्यक्त किए गए। कार्यक्रम में 24 भारतीय भाषाओं के लेखकों को पुरस्कृत किया गया।

इस मौके पर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रसिद्ध कवि, गीतकार व फिल्मकार गुलजार ने कहा कि साहित्य अकादमी ने आरंभ से ही अपनी स्वायत्तता बनाए रखी और उम्मीद की जा सकती है कि आने वाले समय में भी यह बनी रहेगी। लेखकों के बारे में बोलते हुए उन्होंने कहा कि लेखक कुछ अपनी और कुछ दुनिया की बातें दर्ज करता है और उसे आने वाली नस्ल को सौंप जाता है। यह अलग बात है कि आने वाली नस्ल तक पहुंचते-पहुंचते इतिहास बदल जाता है। सभी लेखकों ने मानों अपनी जिंदगी चूल्हे पर रखी है और उसमें उबलती हांडियों पर वे अपने जज्बातों को पका रहे हैं। गुलजार ने सैंतीस भाषाओं पर किए अपने कार्य का जिक्र करते हुए कहा कि इन भाषाओं के कवियों द्वारा 1947 पर कही गई कविताओं का स्वर एक ही है। वह स्वर है एक नई सुबह का इंतजार।

वहीं साहित्य अकादमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने भारतीय साहित्य की सार्वभौमिकता और विविधता के संबंध में कहा कि यह परंपरा भूमंडलीकरण के इस समय में हमारी ताकत है।

एक लाख रुपये की राशि

कार्यक्रम में साहित्य अकादमी पुरस्कार-2019 पाने वाले देश की 24 भाषाओं के लेखकों को पुरस्कृत किया गया। इसमें अंग्रेजी से शशि थरूर, हिन्दी से नन्दकिशोर आचार्य भी शामिल रहे। इस पुरस्कार के साथ रचनाकारों को ताम्रफलक और एक लाख रुपये की सम्मान राशि प्रदान की जाती है। इससे पूर्व, दिन के समय लेखकों के साथ संवाद का कार्यक्रम भी आयोजित किया गया। जिसमें लेखकों ने अपनी रचनाप्रक्रिया से जुड़े सवालों को भी साझा किया।

आदिवासी साहित्य में छिपा है ज्ञान का खजाना

नई दिल्ली | प्रमुख संवाददाता

आदिवासी साहित्य में पारंपरिक ज्ञान का खजाना भरा पड़ा है। इसमें हमारा अतीत छिपा है। साहित्य अकादेमी की ओर से आयोजित साहित्योत्सव-2020 के पहले अखिल भारतीय आदिवासी सम्मिलन कार्यक्रम में कुछ इसी प्रकार के विचार व्यक्त किए गए।

साहित्योत्सव की शुरुआत हिंदी की प्रख्यात लेखिका मन्नू भंडारी ने पिछले वर्ष की गतिविधियों की प्रदर्शनी का उद्घाटन करके की। अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने उनका स्वागत पारंपरिक गमछा और पुस्तकें भेंट करके किया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि मन्नू भंडारी खराब स्वास्थ्य के चलते अपना वक्तव्य नहीं दे पाईं। साहित्योत्सव के अंतर्गत तीन दिवसीय अखिल भारतीय आदिवासी सम्मिलन का आयोजन किया जा रहा है। आयोजन के पहले दिन अकादेमी सचिव के श्रीनिवास ने कहा कि आदिवासी भाषाओं में लोकज्ञान की अमूल्य थाती है। आदिवासी साहित्य में पारंपरिक ज्ञान का खजाना भरा है।

वहीं भाषा विज्ञानी अन्विता अब्बी ने कहा कि आदिवासी वाचिक साहित्य लोक साहित्य परंपरा की ही कड़ी है। हमें सामाजिकता एवं समावेशिता को साथ-साथ लेकर चलना चाहिए। वाचिक साहित्य को कभी मरने नहीं देना चाहिए।

अनुवाद पुरस्कार के लिए 23 पुस्तकों का अनुमोदन

साहित्य अकादेमी ने अलग-अलग भाषाओं की 23 पुस्तकों को अनुवाद पुरस्कार-2019 के लिए अनुमोदित किया है। पुस्तकों का चयन इस संबंध में गठित भाषाओं की त्रिसदस्यीय निर्णायक समितियों की संस्तुति के आधार पर किया गया है। पुरस्कार में 50 हजार की राशि और उत्कीर्ण ताम्रफलक प्रदान किया जाता है।

साहित्यकार ही एक दौर को संभाल कर रखता है : गुलजार

नई दिल्ली (एसएनबी)। मशहूर गीतकार एवं फिल्म निर्देशक गुलजार ने कहा कि साहित्यकार ही होता है जो एक दौर (वक्त) को संभाल कर रखता है और आने वाली पीढ़ी तक पहुंचाता है। उन्होंने कहा कि यह एक प्रक्रिया है। लेखक (अपनी रचनाओं में) कुछ अपनी दर्ज करता है कुछ समाज का दर्ज करता है। गुलजार ने यह बात आज यहां साहित्य अकादमी पुरस्कार द्वारा 24 भारतीय भाषाओं के लेखकों को सम्मानित किए जाने के वक्त कही। इस मौके पर अकाडमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कम्बार भी मौजूद थे।

इस मौके पर गुलजार ने कहा कि अकादमी के पहले अध्यक्ष जवाहर लाल नेहरू ने शुरूआत में ही कहा था कि 'यह जो अध्यक्ष है उसका प्रधानमंत्री से कोई संबंध नहीं है।' स्वायतता की जो बात नेहरू ने की थी उस स्वायतता को आज भी साहित्य अकादमी बरकरार रखा है। उन्होंने कहा कि 1947 को देशभर

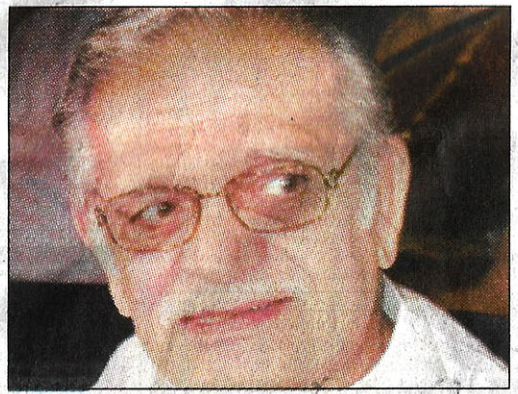

शशि थरूर, नंदकिशोर आचार्य समेत 24 लेखकों को मिला अकादमी पुरस्कार

के कविओं ने किस तरह से देखा है उसके ऊपर वह काम कर रहे हैं। आने वाले समय में 37 भाषाओं के कविओं ने 1947 के आंदोलन को किस रूप में देखा था उसको एक जगह एकत्र कर पाठकों के सामने रखेंगे। कमानी सभागार में आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में अकादमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कम्बार और गुलजार ने लेखकों को पुरस्कृत किया। समारोह में डोगरी के लेखक ओम शर्मा को यह पुरस्कार मरणोपरांत प्रदान किया गया। उनकी जगह उनके पुत्र ने यह सम्मान ग्रहण किया। लोकसभा सांसद शशि थरूर को यह पुरस्कार उनकी पुस्तक 'एन एरा ऑफ डार्कनेस' के लिए दिया गया जबकि नंद किशोर आचार्य को यह पुरस्कार उनके काव्य संग्रह 'छीलते हुए अपने को' के लिए दिया गया। समारोह में उर्दू के समालोचक शाफे किदवई को उनकी आलोचनात्मक किताब 'सवाने सर सैयद ' के लिए पुरस्कृत किया गया। मैथिली के लिए कुमार मनीष अरविन्द को 'जिनगी ऑरियां औन करैत' कविता संग्रह के लिए यह पुरस्कार दिया गया। इसके अलावा अकादमी पुरस्कार से सम्मानित होने वाले लेखकों में चिन्मय गुहा (बांगला), फुकन च. बसुमतारी (बोडो), रतिलाल बोरीसागर (गुजराती), विजया (कन्नड), अब्दुल अहद हाजिनी (कश्मीरी), निलबा अ. खांडेकर (कोंकणी), वि. मधुसूदनन नायर (मलयालम), वैरिल थांगा (मणिपुरी), अनुराधा पाटील (मराठी), सलोन कार्थक (नेपाली), तरुणकान्ति मिश्र (उडिया), किरपाल कजाक (पंजाबी), रामस्वरूप किसान (राजस्थानी), काली चरण हेम्ब्रम (संथाली), ईश्वर मूरजाणी (सिंधी), चो. धर्मन (तमिल) और बंडि नारायण स्वामी (तेलुगु) शामिल है। पुरस्कार में प्रत्येक विजेता को एक एक लाख रुपए, प्रशस्ति पत्र और प्रतीक चिह्न भेंट किया गया।

छह दिवसीय साहित्य अकादमी के दूसरे दिन पुस्तक प्रदर्शनी, प्रकाशन का साहित्य प्रेमियों ने उठाया आनंद

लेखक कुछ अपनी व कुछ दुनिया की बातें दर्ज करता है : गुलजार

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली : साहित्य अकादमी द्वारा आयोजित छह दिवसीय साहित्योत्सव के दूसरे दिन साहित्य अकादमी पुरस्कार 2019 के विजेताओं को मंडी हाउस स्थित कमानी सभागार में पुरस्कृत किया गया। इसमें मुख्य अतिथि के रूप में प्रख्यात कवि, कथाकार व फिल्म निर्देशक गुलजार शामिल रहे। उन्होंने कहा, लेखक कुछ अपनी व कुछ दुनिया की बातें दर्ज करता है और उसको आने वाली नस्ल के लिए सौंप कर जाता है। यह अलग बात है कि आने वाली नस्ल तक पहुंचते-पहुंचते इतिहास बदल जाता है। सभी लेखकों ने मानों अपनी जिंदगी चूल्हे पर रखी है व उसमें उबलती हांडियों पर वे अपने जज्बातों को पका रहे हैं।

कमानी ऑडिटोरियम में आयोजित साहित्योत्सव में बोलते मुख्य अतिथि गुलजार • सौजन्य : अकादमी

रविंद्र भवन में आयोजित साहित्योत्सव में प्रदर्शनी देखते साहित्य अकादमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कांबरा व अन्य • जागरण

वहीं, साहित्य के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने कहा, भारतीय साहित्य की जो परंपरा विदेशी साहित्य की परंपरा से कम नहीं है। इस मौके पर अकादमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक, सचिव के श्रीनिवासराव, लेखक जयश्री गोस्वामी महंत (असमिया), चिन्मय गुहा (बांग्ला), फुकन चंद्र बसुमतारी (बोडो), स्वर्गीय ओम -शर्मा 'जंद्रयाड़ी' (डोगरी), शशि थरूर (अंग्रेजी), रतिलाल वोरीसागर (गुजराती), नंदकिशोर आचार्य (हिंदी), विजया (कन्नड़), अब्दुल अहद हाजिनी (कशमीरी), निलबा अ. खांडेकर (कोंकणी), कुमार मनी अरविंद (मैथिली), वि. मधुसूदनन्नायर (मलयालम), बेरिल थांगा (मणिपुरी), अनुराधा पाटील (मराठी), सलोन कार्थक (नेपाली), तरूणकांत मिश्र (उड़िया), किरपाल कजाक (पंजाबी), रामस्वरूप किसान (राजस्थानी), पेन्ना मधुसूदन (संस्कृत), कालीचरण हेम्ब्रम (संताली), ईशवर मूरजाणी (सिंधी), चो. धर्मन (तमिल), बंडिनारायण स्वामी (तेलुगु) व शाफे क़िदवई (उर्दू) को पुरस्कृत किया गया।

साहित्योत्सव 2020 की शुरुआत

मन्नू भंडारी ने किया प्रदर्शनी का उद्घाटन

वाचिक साहित्य को पाठ्यक्रम में शामिल करना जरूरी : अन्विता अब्बी

हमारे संवाददाता

नई दिल्ली। साहित्योत्सव 2020 का शुभारंभ आज अकादेमी की वर्ष 2019 की गतिविधियों की प्रदर्शनी के उद्घाटन से हुआ। प्रदर्शनी का उद्घाटन प्रख्यात लेखिका मन्नू भंडारी ने किया। उद्घाटन से पहले अकादेमी के अध्यक्ष चंदशेखर कंबार ने उनका स्वागत पारंपरिक गमछा और पुस्तकें भेंट करके किया। अपने स्वागत भाषण में अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने अकादेमी द्वारा वर्ष में आयोजित प्रमुख गतिविधियों की जानकारी देते हुए बताया कि अकादेमी ने पिछले वर्ष 715 कार्यक्रम आयोजित किए। अकादेमी ने 484 किताबे प्रकाशित की, जिनमें 239 नए प्रकाशन और 245 पुनःमुर्दित पुस्तकें थीं। उन्होंने विभिन्न देशों के बीच सांस्कृतिक विनिमय की जानकारी भी दी।

मन्नू भंडारी खराब स्वास्थ्य के कारण कोई वक्तव्य नहीं दे पाई, लेकिन उन्होंने सबके बीच अपनी उपस्थिति पर खुशी प्रकट की।

प्रदर्शनी उद्घाटन के बाद पारंपरिक दक्षिण भारतीय वाद्य यंत्रों के स्वरों के बीच दीप प्रज्जवलन भी किया गया। मन्नू भंडारी के साथ साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष चंदशेखर कंबार, उपाध्यक्ष माधव कौशिक, साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव एवं विभिन्न भारतीय भाषाओं के संयोजक भी उपस्थित थे। आज अपराह्न 2.30 बजे तीन दिवसीय अखिल भारतीय आदिवासी सम्मिलन का शुभारंभ हुआ। कार्यक्रम का उद्घाटन वक्तव्य प्रतिष्ठित भाषाविज्ञानी एवं विदुषी अन्विता अब्बी ने दिया। कार्यक्रम के आरंभ में साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. चंदशेखर कंबार ने परंपरा गमछा और पुस्तकें भेंट कर उनका स्वागत किया। अपने स्वागत वक्तव्य में साहित्य अकादेमी के सचिव के नवासराव ने भाषा को मस्तिष्क का दर्पण मानते हुए कहा कि आदिवासी भाषाओं में लोकज्ञान की अमूल्य थाती है, जिसमें हमारा अतीत छुपा हुआ है। आदिवासी साहित्य में पारंपरिक ज्ञान के खजाने भरे हैं। हमें उनके इस ज्ञान को संरक्षित करना है और उसे लंबे समय तक जिंदा रखना है। अपने उद्घाटन वक्तव्य में अन्विता अब्बी ने कहा कि आदिवासी वाचिक साहित्य, लोक साहित्य की परंपरा की ही कडी है, जिसमें हमारा दैनिक जनजीवन नदी की धारा की भाँति प्रवाहित होता है। हमें सामाजिकता एवं समावेशिता को साथ-साथ लेकर चलना चाहिए। वाचिक साहित्य को कभी मरने नहीं देना चाहिए। इसे स्कूल के पाठ्यक्रम में शामिल करना चाहिए।

साहित्योत्सव 2020 के शुभारंभ के दौरान प्रख्यात लेखिका मन्नू भंडारी।

कार्यक्रम का अगला सत्र कविता-पाठ से संबंधित था, जिसमें प्रख्यात कवि चंद्रकांत मुरासिंह की अध्यक्षता में च. सोते आईमोल (आईमोल), मुक्तेश्वर केंपराई (दिमासा), मिर्थनार्क के. मरक (गारो), रूप लाल लिंबू (लिंबू) एवं न्गुरांग रीना (त्रिशी) ने सर्वप्रथम अपनी मूल आदिवासी भाषा में एक कविता तथा अन्य कविताएँ हिंदी या अंग्रेजी अनुवाद में प्रस्तुत किया। सांस्कृतिक कार्यक्रम के आज सायं 6.00 बजे पारंपरिक लोकसांगीतिक नाटक श्रीकृष्ण पारिजात, दुर्गव्वा मुधोळ एवं साथी कलाकारों द्वारा प्रस्तुत किया गया। समारोह का मुख्य आकर्शण साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2019 अर्पण समारोह कमानी सभागार में कल सायं 5.30 बजे होगा और उसके मुख्य अतिथि प्रतिशिठत कवि, कथाकार एवं फिल्म निर्देषक गुलजार होंगे।

यकीन मानिये यहीं मिलेगी 1796 में छपी किताब

रवींद्र भवन में साहित्योत्सव का पुस्तकालय है खास

आदित्य पाण्डेय

नई दिल्ली। साहित्योत्सव हर साल साहित्य प्रेमियों के लिय खास होता है, इस साल भी बेहद खास है। रवींद्र भवन में सोमवार से शुरू तीन दिवसीय साहित्योत्सव का पुस्तकालय सबसे खास है, जहां न केवल दुर्लभ भारतीय साहित्य बल्कि अंतर्राष्ट्रीय साहित्य भी उपलब्ध है जो और कहीं नहीं मिलेगा। यहां विलियम जोंस द्वारा सन 1796 में संस्कृत से अंग्रेजी में किया गया मनु स्मृति का अनुवाद उपलब्ध है। यह सबसे पुरानी किताब है।

मनु स्मृति के अंग्रेजी अनुवाद इंस्टीट्यूट्स ऑफ हिंदू लॉ की एक प्रति भी यहां प्रदर्शित की गई है। साथ ही साल 1947 से पहले की प्रकाशित 300 अन्य दुर्लभ किताबों को भी यहां प्रदर्शित किया गया है। एक हजार अंतर्राष्ट्रीय शास्त्र भी हैं। मैक्समूलर द्वारा सनातन धर्म के वेदों का संस्कृत से अंग्रेजी में अनुवाद भी मिल रहा है। बुद्ध महायान सूत्र की अंग्रेजी प्रति भी उपलब्ध है। धर्म, चिकित्सा, दर्शन, साहित्य, कानून, महाकाव्य और प्राचीन कथाओं का संस्कृत से अंग्रेजी में अनुवाद भी प्रदर्शित किया गया है। साहित्योत्सव का मुख्य आकर्षण हमेशा इसकी पुस्तक प्रदर्शनी और बिक्री है। इस बार भी यहां किताबों पर 25 से 75 प्रतिशत तक छूट दी जा रही है। साहित्य अकादमी की तीनों पत्रिकाओं का ग्राहक बनने पर और 25 प्रतिशत की छूट दी जा रही है। साहित्य अकादमी के पुस्तकालय में 2 लाख से ज्यादा दुर्लभ किताबें हैं, मात्र 2 हजार रुपये का वापसी डिपॉजिट जमा करा के पुस्तकालय की सदस्यता ली जा सकती है। सदस्य हर महीने दो किताबें घर ले जा सकते हैं।

साहित्यकारों को दिए अकादमी पुरस्कार

साहित्य अकादमी ने इस साल 24 भाषाओं के साहित्यकारों को पुरस्कार प्रदान किया। कमानी सभागार में आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में जयश्री गोस्वामी महंत, चिन्मय गुहा, फुकन चंद बसुमतारी, मरणोपरांत अम शर्मा जन्द्रयाड़ी, शशि थरूर, रतिलाल बोरीसागर, नंदकिशोर आचार्य, विजया, अब्दुल अहद हाजिनी, निलबा अ. खांडेकर, कुमार मनीष अरविंद, वी. मधुसूदनन नायर, बेरिल थांगा, अनुराधा पाटील, सलोन कार्थक, तरुणकान्ति मिश्र, किरपाल कंजाक, रामस्वरूप किसान, पेन्ना मधुसूदन, काली चरण हेम्ब्रम, ईश्वर मूरजाणी, चौ. धर्मन, बंडि नारायण स्वामी और शाफे किदवई को प्रख्यात कवि, कथाकार और फिल्म निर्देशक गुलजार के हाथों साहित्य अकादमी पुरस्कार प्रदान किया गया।

साहित्योत्सव 2020: भारतीय परंपरा व प्रकृति पर परिचर्चा, एलजीबीटीक्यू कवि सम्मेलन

प्रख्यात कन्नड लेखक एवं साहित्य अकादमी के महत्तर सदस्य एसएल भैरप्पा का कहना है कि भारतीयों के लिए प्रकृति ईश्वर की एक रचना या अभिव्यक्ति है और इसलिए वह पवित्र और पूजा के योग्य है.

प्रादेशिकता, पर्यावरण और साहित्य पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का चित्र

नई दिल्ली: साहित्योत्सव 2020 के चौथे दिन का खास आकर्षण 'प्रादेशिकता, पर्यावरण और साहित्य' पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के अलावा अखिल भारतीय एलजीबीटीक्यू कवि सम्मिलन और साहित्य अकादमी सम्मान 2019 से पुरस्कृत लेखकों की बातचीत का कार्यक्रम आमने-सामने था. शाम को सांस्कृतिक कार्यक्रम के अंतर्गत भारतीय वाद्य यंत्रों की समेकित प्रस्तुति ताल वाद्य कचेरी प्रस्तुत की गई.

इस अवसर पर 'प्रादेशिकता, पर्यावरण और साहित्य' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए प्रख्यात कन्नड लेखक एवं साहित्य अकादमी के महत्तर सदस्य एसएल भैरप्पा ने कहा कि समस्त भारतीय भाषाओं में प्रकृति शब्द का प्रयोग शरीर या शारीरिक स्वास्थ के लिए किया जाता है. पश्चिमी और भारतीय मान्यताओं के अनुसार मनुष्य और प्रकृति के बीच संकटों में एक बुनियादी अंतर है. भारतीयों के लिए प्रकृति ईश्वर की एक रचना या अभिव्यक्ति है और इसलिए वह पवित्र और पूजा के योग्य है.

भैरप्पा का कहना था कि पश्चिम के लोग मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए पेड़ों और जंगलों को बनाए रखने की वकालत करते हैं, जबकि भारतीय परंपरा प्रकृति के साथ अपने आध्यात्मिक संबंध को बनाए रखने के लिए यही काम करती है.

इस उद्घाटन सत्र का बीज वक्तव्य अमित चौधुरी ने दिया और अध्यक्षीय भाषण चंद्रशेखर कंबार ने दिया. संगोष्ठी का अगला सत्र 'महाकाव्यों, उपाख्यानों एवं मिथकों में प्रकृति' विषय पर केंद्रित था. इस सत्र में अपना अध्यक्षीय भाषण प्रस्तुत करते हुए साहित्य अकादमी के पूर्व अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि प्रकृति के प्रति किसी भी बातचीत से पहले यह बात महत्त्वपूर्ण है कि हम उसके प्रति किस तरह का नजरिया रखते हैं. यदि हमारी दृष्टि उपयोगितावादी है तो हम उसको शोषण की दृष्टि से देखेंगे और अगर हमारी दृष्टि पारंपरिक है तो हम उसे पूजनीय मानेंगे.

तिवारी ने बाङ्ला साहित्य में विभूतिभूषण बंद्योपाध्याय, ओड़िआ साहित्य में गोपीनाथ महांति का जिक्र करते हुए कहा कि कोई भी सृजनात्मक रचना पाठकों में तभी महत्त्वपूर्ण स्थान पाती है, जब वह प्रकृति के प्रति निर्मल भावनाओं के साथ व्यक्त की जाती है. उन्होंने कालीदास की संस्कृत रचनाओं में हिमालय के सौंदर्य के कुछ रोचक प्रसंगों पर बात करते हुए कहा कि हमें प्रकृति को मनुष्य का दर्जा देना होगा तभी हम उसे बचा पाएंगे. उन्होंने महात्मा गाँधी जी का जिक्र करते हुए कहा कि शायद वे विश्व के अंतिम बड़े व्यक्ति थे, जिन्होंने पर्यावरण सुरक्षा को अपना मुख्य विषय बनाया था.

साहित्य अकादमी द्वारा अपनी तरह के विशिष्ट आयोजन एलजीबीटीक्यू कवि सम्मिलन में स्वागत भाषण देते हुए साहित्य अकादमी के सचिव के श्रीनिवासराव ने कहा कि हम लोग भारत के सभी कवियों का बिना भेदभाव के सम्मान करते हैं और उन्हें मंच प्रदान करते हैं. सम्मिलन के मुख्य अतिथि एवं अंग्रेज़ी के प्रख्यात कवि होशांग मर्चेंट थे. मर्चेंट ने अपनी तीन कविताओं का पाठ किया.

होशांग मर्चेंट की एक कविता प्रख्यात गणितज्ञ रामानुजम की मृत्यु पर केंद्रित थी और उसका शीर्षक 'रोशनी' था. उनकी एक कविता एलजीबीटीक्यू लोगों को होने वाली परेशानियों पर केंद्रित थी. इस कविता में उन्होंने मंजनू को पत्थर मारने का प्रतीक प्रयुक्त किया. अपने बीज भाषण में आर. राज राव ने कहा कि आज से 17 महीने पहले स्थितियां दूसरी थीं और यह कल्पना करना भी मुश्किल था कि हमारे प्रतिनिधि इस तरह किसी सार्वजनिक मंच पर अपनी अभिव्यक्तियों को प्रस्तुत कर सकेंगे.

आर. राज राव ने इसके लिए स्वयं एवं साथियों द्वारा लंबी कानूनी लड़ाई का जिक्र करते हुए बताया कि आज भी हम कानूनन कुछ अधिकार पा चुके हैं लेकिन अभी भी हमारी लड़ाई सामाजिक पहचान बनाने की है. उन्होंने कई विदेशी कानूनों की जानकारी देते हुए कहा कि हमारी लड़ाई अभी भी जारी है.

अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए साहित्य अकादमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने कहा कि एलजीबीटीक्यू लोगों के साथ किए जाने वाला अमानवीय व्यवहार उन्हें व्यथित करता है. हमें सामाजिक तौर पर उन्हें पूरी तरह स्वीकार करना होगा तभी हम एक संतुलित समाज की कल्पना कर पाएंगे.

अगले सत्र में विक्रमादित्य सहाय की अध्यक्षता में दस एलजीबीटीक्यू कवियों द्वारा कविताएं प्रस्तुत की गई. सभी कविताओं का मूल स्वर उनके प्रति उपेक्षा से भरा सामाजिक व्यवहार था. रवीना बारिहा ने अपनी कविता में कहा -
दुख के पाठ पढ़कर और निर्मल हुई मैं
पाकर तिरस्कार तुम्हारा अनजाने में सबल हुई मैं.

इस कवि सम्मेलन में अदिति आंगिरस, चाँदिनी, गिरीश, शांता खुराई, रेशमा प्रसाद, अब्दुल रहीम, आकाश राय दत्त चौधुरी, तोशी पांडेय, विशाल पिंजाणी, अलगू जगन और डेनियल मेंडोंका ने अपनी कविताएं प्रस्तुत कीं. आमने-सामने कार्यक्रम के अंतर्गत आज बाङ्ला, गुजराती, हिंदी, मलयाळम् एवं उर्दू के पुरस्कृत लेखकों से प्रतिष्ठित साहित्यकारों, विद्वानों से बातचीत की गई.